रात्रि क्लास
16-7-68

कचहरी करना अच्छा है। बच्चों का ही फ्यदा है। इन मे जो अवगुण होंगेवह आस्ते2 निकल जावेंगे। सर्वगुण सम्पन्न बनना है। अवगुण अच्छा नहींलगता। दिल को भाता नहीं। वह दिल पर चढ़ते ही नहीं। कुदृष्टि नहीं रखनी है। अंधों के स्कूल में भाषण करने गये थे ना। बाबा समझाते हैं आंखें ही बड़ा धोखा देती है। सूरदास की कहानी भी इस समय की है। गुस्से आये कहते हैं इससे तो आंख न होता तो अच्छा था। गुस्से में आकर आंखें ही निकाल दी। क्योंकि आंखें ही बड़ी नुकसान देती है। आंखों से ही विकारी कुदृष्टि जाती है। अभी बाप कहते हैं आत्मा को देखो। शरीर को न देखो। ~~कु~~=कु= फिर भी कुछ न कुछ नुकसान कर देते हैं। आंखें धोखा देती है, तो जो रायल बच्चे होंगेवह तो आंखों पर गुस्सा करेंगे। यह तीसरा नेत्र तुमको ज्ञान का मिलता है। बाप जानते हैं, चलन से समझ जाते है। इनकी दृष्टि गन्दी है। वह पद भ्रष्ट कर देते। और बहुत घाटा पड़ जाता है। इस समय पता नहीं पड़ता। माया वस हो हार खा लेते हैं। नहीं तो यह धोखा कब खाना न चाहिए। इससे आंखें बन्द कर देना अच्छा। वह अंधे के औलाद अंधे कहा गया है। क्योंकि अन्धश्रधालु हैं। यहां तो बाप कहते हैं पवित्र बनना है। कुदृष्टि न जानी चाहिए। बहुतों मेंकुदृष्टि है। बाप जानते हैं। ब्राहमणियों में भी कुदृष्टि जाता है। वह क्या पद पावेंगे। जन्म-जन्मान्तर पद भ्रष्ट। और बहुत सजा खावेंगे। गाया हुआ है जैसे उठ पतन पर ... बाबा तो सभी का अनुभवी है।

इस समय वास्तव में यह जो आंखें हैंउनको बड़ी खबरदारी रखनी है। सब से जास्ती बच्चे इस में ही गिरते हैं। खुद भी समझते हैं हम दृष्टि से कितना खराब होते हैं। एक दो में। ला बहुत कड़ा है। शिव बाबा को भाकी पहन फिर किसको भी पहन न सके। बाप कहते हैं शिव बाबा को याद कर फिर भाकी। नहीं तो व्यभिचारी कहा जाता। उन पर पाप पड़ता है। बाबा जानते हैं छी छी बच्चे हैं। चलते2 शादी कर लेते तो कितना दन्ड पड़ जाता है। ढेर गिरते हैं। शिव बाबा की भाको पहनी तो बस। फिर मेरा तो एक शिव बाबा दूसरा न कोई। भाई बहन ~~भाकी पहनने~~ से भी कुदृष्टि जाती है। इसलिए कहा है भाई-भाई देखो। यह बहुत2 ऊंची मंजिल है। बड़ी मेहनत करते2 पिछाड़ी में वह अवस्था आ सकती है। विश्व का ~~मा~~= मालिक बनना भी कम बना है ~~न~~ क्या। भगवान कहते हैं मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूं। तुमको बनाता हूं। यह मंजिल बड़ी ऊंच है। देह-अभिमान सारा तोड़ना है। देखने में तो बहुत सहज है। सेकण्ड में जीवन मुक्ति। सेकण्ड में नर से नारायण बिश्व का मालिक बन सकते हो। अपन को आत्मा समझो। बाप को भाकी पहने फिर किसके शरीर को भाकी नहीं पहन सकते। बाप तो यह समझानी देते हैं। कल्प2 देंगे। और कब किसके मुख से ऐसे कब नहीं सुनेंगे। अभी जो तुमको सिखाता हूंवह कल्प2 सिखाऊंगा। बाप कितना समझाते हैं फिर माया नाक से पकड़ लेती है। बाप की श्रीमत पर नहीं चलते। भारतबहुत2 गंदा है। गुरुओं से गन्दा होना, बाप से बच्चियों का गंदा होना, बाबा के पास तो सभी मिसाल हैं। लिखत में लिखकर देते हैं। तब बाप कहते हैं देखते हुये न देखो।

बच्चों को अपनी सम्भाल रखनी है। एमआबजेक्ट सामने खड़ाहै। संगम युग पर ही बाप बैठ ऐसा सुनाते हैं। ऐसे भी नहीं कि जल्दी से बन जावेंगे। ऊंच पद पाना है। वह पद फिर कल्प2 पाते रहे। इसके लिए बहुत मेहनत चाहिए। बहुतों के अन्दर में शैतानीरहती है। सच्चाई नहीं। बाबा पास रहते हैं। परन्तु सच्चाई नहीं। ~~आज~~= आज बाबा के पास हैं कल जाकर औरों के पास रहेंगे। अन्दर में शै-तानी झूठ, पाप भरा हुआ है। बनना तो रायल है ना। प्रतिज्ञा करते हो ऐसा बनेंगे। अपने से पूछे कितना अन्दर में शैतानी कपटी है। फिर क्या पद पावेंगे। बाप तो ऐसे=हैं आये हैं नर से नारायण बनाने। परन्तु जब अपने ऊपर कृपा भी करे ना। अपन को अपनी चलन से ही घात कर देते है। बाप तो बहुत ऊंच पद प्राप्त कराने आये हैं। कल्प-~~कल्प~~ कल्पान्तर लिए। मिस किया तो कल्प कल्पान्तर सजा खाते रहेंगे। न सुधरेंगे अभी तो जन्म-जन्मान्तर के जो पाप किये हैं उनका सा० होता रहेंगा, सजा खाते रहो।2। जन्म का दुख पहले से ही पा लेंगे। सुख जैसे ~~खत्म~~ हो जाता। बहुत खबर-दार रहना है। बाप भगवान, उनका राईट हैंड है धर्म-राज। उनके पास भी नोट होता है। बच्चों को बाबा

~~मन~~

वार वार कहते हैं कुदृष्टि मतरखो। बाबा के पास आते हैं बात मत पूछो। यहां समझते भी हैं घर जाते हैं फिर वही गन्दी कुदृष्टि। इसकलए बाबा कहते हैं बाबा को भाकी पहन दूसरी की पहनी तो बहुत भारी पाप चढ़ जाता है। इससे तो भाकी न पहनना अच्छा है। यह ज्ञान की बातें हैं। बहुतों को अच्छा नहीं लगता है। फिर भी साकार शरीर है ना। आर्यसमाजियों ने भी भाकी का चित्र हाथ किया है। ड्रामा के अनुसार बिघ्न पड़ते हैं। कोई निमित बन पड़ते हैं। तुम्हारी सामना आर्यसमाजी ही करते हैं। और कोई नहीं करते हैं। आर्यसमाजी कटर हैं। और हैं भी कल के। वह निराकार शिव को मानते हैं। उन में भी भिन्न2 हैं। कोई देवताओं को मानते हैं तो कोई नहीं मानते हैं। बाप कहते हैं तुमको तो एक के सिवाय और किसको जानना ही नहीं है। जैसे तुम बच्चे हो वैसे बाप है। उन में ज्ञान है। तुम्हारे में ज्ञान नहीं हैं। आत्मा तो एक ही है ना। सिर्फ तुम्हारी आत्मा पतित है। इसलिए ताकत कम है। सर्वशक्तिवान बाप को कहा जाता है। क्योंकि सतोप्रधान है। ज्ञान का सागर है। नालेज से ही तुम बनते हो। नालेज और पवित्रता। खबरदार रहते रहो। आंखें धोखा देती है नहीं तो 21 जन्म का पद गंवायें देंगे। बच्चे जानते हैं बाप सिर्फ कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आता हूं। दूसरा कोई कह न सके। तुम बच्चे जानते हो हम शिव बाबा के पास आते हैं। ब्रह्मा भी देवता है। प्रजापिता ब्रह्मा। यह भी 84 जन्म लेंगे ना। इनको पावन देवता भी कहते हैं। तो पतित भी कहते हैं। देवता बन फिर नीचे उतरेंगे। तुम ब्राहमण पावन भी बनेंगे फिर पतित भी। तो अभी सयाने बनो। अपने ऊपर रहम करो। कुदृष्टि छोड़ दो। भारत में कुदृष्टि ही है। सतयुग में कुदृष्टि होती ही नहीं। न सुधारेंगे सुपन्त बहुत कड़ी2 सजा खावेंगे। बहुत पछतावेंगे। तुमको पिछाड़ी में सा० होनी है। इसलिए अपन पररहम करो। मांगो नहीं। बाप कहते हैं एक को याद करो। देहधारी कोई को याद नहीं करो। ब्रहमा विष्णु शंकर को भी याद न करो। तुमने प्रतिज्ञा भी किया है। कोई हे पिलीग आता है यह पतिज्ञा पालन रहे मेरा तो एक दूसरा न कोई। बाप भी कहते हैं मेरे तो सभी बच्चे दूसरान कोई। रूहों को ही देखते रहें। बाप के साथ बहुत इमानदारी चाहिए। डिसऑनेस्ट न होनी चाहिए बाप के साथ। इसमें समझ की बात है। तुम बच्चों में मनुष्य भी हैं जनावर भी हैं। कोई मनुष्य से देवता बनते हैं कोई जनावर के जनावर ही रह जाते हैं। सूरत मनुष्य की सीरज जनावरों मिसल ही है। बाप तारना करते हैं पोतामल देखो हमारे में कोई अवगुण तो नहीं है। सर्वगुण सम्पन्न ... बने हैं। रोज अपने से पूछो तब ही ऊंच पद पा सकेंगे। बाप को न बतावेंगे छिपावेंगे तो बृधि होती जावेगी। अन्दर खाता रहेगा। बाबा सावधान करते रहते हैं। अपना कैरेक्टर्स सुधारो। तुम देवी कैरेक्टर वाले बनते हो। आसुरी कैरेक्टर को जल्दी बदलना है। मौत पर भरोसा थोड़े ही है। बहुत गई .... यह पुरानी दुनिया खत्म हुई कि हुई। नई दुनिया में चलना है। तो देवी गुण जरूर चाहिए। अन्दर खाता होगा हम क्या2 कर रहे हैं। बाप जानते हैं बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये कमल फूल समान रहो। जो देखता हूं यह सभी तो खत्म होने वाला है। इनको देखकर ही क्या करें। दिन प्रति दिन पुराने घर का विनाश नजदीक होता जावेगा। फिर टूलेट हो जावेंगे। इसलिए बाप कहते हैं सिमरसिमर सुख पाओ .... अन्दर बाहर अहुत साफ चाहिए। कोई भी खराब काम न होना चाहिए। बाप को याद करो तो पाप कटे। बाप का बनकर पाप किया तो सौगुणा दन्ड। इसलिए बाबा खूत से भीलिखवाते हैं तकदीर हो तो ऐसी (ल०ना०) हो। हम इन जैसे सर्व गुण सम्पन्न ..... हैं। अवगुण है तो निकालना है। नहीं तो मरे। पद भी भ्रष्ट होगा। नहीं सुधारते हैं, चार्ट नहीं रखते हैं तो खलास। सिर्फ याद का ही चार्ट नहीं। सर्व गुण सम्पन्न भी बनना है।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट।

रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

-: मूल बात कि अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो, दैवी गुण धारण करो तो विश्व के मालिक बनेंगे:-*